Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4117–4120

वर्त्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा की उपयोगिता

मुरारी कुमार[1], डॉ. राम कुमार पाठक[2]

[1] शोधकर्त्ता, मंगलायतन विश्वविद्यालय बेसवांन, अलीगढ़ (उत्तर-प्रदेश)
[2] शोध निर्देशक (एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र), मंगलायतन विश्वविद्यालय बेसवांन, अलीगढ़ (उत्तर-प्रदेश)

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.4704

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

शिक्षा एक महत्वपूर्ण और सार्वभौम विषय है। मानव समाज के लिए अव्यावश्यक है। शिक्षा मानव विकास की नींव है। इसी शैक्षिक विकास के कारण मानव संसार के सभी प्राणियों का सिरमौर है। शिक्षा के कारण ही मानव अपनी सामाजिकता, विवेक, वाणी, सृजनशीलता, विभूषिय होता है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य की जन्यजात शक्तियों का विकास होता है इसके परिणाम स्वरूप उसके ज्ञान व कौशल में वृद्धि होती तथा उसके व्यवहार के स्वरूप में परिवर्त्तन आता है। यह प्रक्रिया मनुष्य के जन्म लेते ही शुरू हो जाता है। जन्म के समय बच्चा संसार की सभी गतिविधियों से अनजान रहता है। वह बिल्कुल भी असामाजिक होता है। लेकिन वक्त के साथ जैसे-जैसे वो बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे वह परिवार व समाज के सम्पर्क में आते जाता है। विद्यालय जाने से पूर्व बालक परिवार एवं समाज से बहुत कुछ सीख चुका होता है। इसी सीखनें के क्रम में बालक के अंदर अनुशासन और मूल्यों का विकास होता है। सीखने-सिखाने का यह क्रमबद्ध विकास प्रक्रिया स्कूल बाहर एवं स्कूल के अंदर चलते रहता है। यह स्कूल छोड़ने के बाद भी चलता रहता है।

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक महत्वपूर्ण और सार्वभौम विषय है। मानव समाज के लिए अव्यावश्यक है। शिक्षा मानव विकास की नींव है। इसी शैक्षिक विकास के कारण मानव संसार के सभी प्राणियों का सिरमौर है। शिक्षा के कारण ही मानव अपनी सामाजिकता, विवेक, वाणी, सृजनशीलता, विभूषिय होता है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य की जन्यजात शक्तियों का विकास होता है इसके परिणाम स्वरूप उसके ज्ञान व कौशल में वृद्धि होती तथा उसके व्यवहार के स्वरूप में परिवर्त्तन आता है। यह प्रक्रिया मनुष्य के जन्म लेते ही शुरू हो जाता है। जन्म के समय बच्चा संसार की सभी गतिविधियों से अनजान रहता है। वह बिल्कुल भी असामाजिक होता है। लेकिन वक्त के साथ जैसे-जैसे वो बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे वह परिवार व समाज के सम्पर्क में आते जाता है। विद्यालय जाने से पूर्व बालक परिवार एवं समाज से बहुत कुछ सीख चुका होता है। इसी सीखनें के क्रम में बालक के अंदर अनुशासन और मूल्यों का विकास होता है। सीखने-सिखाने का यह क्रमबद्ध विकास प्रक्रिया स्कूल बाहर एवं स्कूल के अंदर चलते रहता है। यह स्कूल छोड़ने के बाद भी चलता रहता है।

मूल्य शिक्षा के आधार पर ही मानव धीरे-धीरे अपने अंदर संस्कार और योग्यता का धारण करता है। इससे मानव में एक सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर प्रेरित करता है जो हमारे मन-मस्तिष्क को स्वच्छता प्रदान करते है। मूल्यों के सतत् विकास में घर-परिवार स्कूल की संपूर्ण व्यवस्था, शिक्षकों का दृष्टिकोंण, आपसी सहयोग, अभिभावक और शिक्षकों का बच्चों के प्रति भावना आदि का विशेष महत्व है। विद्यालय और परिवार समाज में मूल्यों का बीजारोपण और उसे उन्मत रूप से प्रस्फुटित करने के लिए जवावदेह होते है। यह मूल्यों को सुसुप्त अवस्था से जाग्रत करते

है। इससे माध्यम से मूल्य अपने पथ पर आगे बढ़ते है। नए आविष्कारों और सृजन के कारण विश्व बहुत तेजी से बदल रहा है इस प्रौद्योगिकीय युग में हमें अपनी दैनिक जीवन परिस्थितियों में बहुत सारी कठिनाईयों और संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है। जीवन से जुड़ी गंभीर प्रश्नों और आदर्शों को इन मूल्य की परिपाटी पर ही सही ठंग समझ सकते और उका समाधार खोज सकते है। मूल्य के अनुस्थापन को दृढ़ करने में माता-पिता और छत्रों में मूल्य परिवर्तन लाने में अध्यापकों की भूमिका सामूहित रूप से सम्मिलित है।

2. मूल्य शिक्षा का अर्थ

मूल्य शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग एक दूसरे को नैंतिक मूल्य का ज्ञान देते है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थार्नातरित होता है।

मूल्य की विषयवस्तु बहुत गइन और तार्किक है। वैल्यू (मूल्य) शब्द लैटिन मूल Valerie से निकला है। जिसका अर्थ है प्रभावशाली (शक्तिशाली) तेजस्वी या उत्साही। मूल्यवान होने का अर्थ है कुछ सद्गुणों की प्राप्त करना। संस्कृत शब्द सिजका अर्थ मूलय होता है वह इष्ट अर्थात् अपेक्षित या वांछित। चुँकि व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति सचेतन रूप में करता है, भारतीय दार्शनिकों द्वारा दिया गया शब्द पुरूषार्थ अथवा मानव मूल्य है जिसका अभिप्राय है ''वह ध्येय (साहय) जो व्यक्ति सचेतन रूप में खोजते है।''

कैम्ब्रिज डिक्शनरी ऑफ फिलोसॉफी के अनुसार मूल्य (Value) उस वस्तु का गुण (Worth) या योग्यता है जिसे हम अच्छा समझते है जैसे- प्रेम, कृपा, शांति, संतोष, इंमानदारी, भद्रता तथा सादगी इत्यादि। मूल्य शिक्षा एक ऐसा शब्द के संदर्भ भी काफी वृइत् है। कुछ शिक्षाशास्त्री इसे उस प्रक्रिया के समस्त पक्षों का नाम देते है जिसके द्वारा अध्यापक बच्चों में इसे संचारित करते है।

कुछ इसे उस क्रिया के रूप में देखते है जो किसी भी संस्था में घटित हो सकती है इसके दौरान कुछ व्यक्ति जो बड़े है या सत्ता के पद पर बैठे है या अधिक अनुभवी है दुसरे व्यक्तियों कि किसी न किसी रूप में सहायता करते है या तो उन मूल्यों को स्पष्ट करने में जो उनके अपने व्यवहार के मूल में हैं या इन मूल्यों और संबंधित व्यवहार को जो उनके अपने या दूसरों की दीर्घकालिक कल्याण के लिए है के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए या उन मूल्यों और व्यवहार पर चिंतन करने या ग्रहण करने के लिए, जिन्हें वे स्वंय के तथा दूसरों के दीर्घकालिक कल्याण के लिए अधिक प्रभावी है।

इसका अर्थ है कि मूल्य शिक्षा घर विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और अन्य शैक्षिक युवा संस्थाओं या संगठनों द्वारा दी जा सकती है। मूल्य शिक्षा के मुख्यत: दे उपागम होते है। कुछ इसकों एक ऐसे मूल्य समूह को संचारित करने के रूप में देखते है जो प्राय: सामाजिक या धार्मिक नियमों या सांस्कृतिक नीतिशास्त्र से प्राप्त होती है। कुछ अन्य इसे सुकराती चिंतन के रूप में देखते है जहाँ व्यक्तियों को धीरे-धीरे यह अनुभव करा दिया जाता है कि उनके लिए तथा उनके समुदाय के लिए श्रेष्ठ व्यवहार क्या है।

3. संबंधित साहित्य की समीक्षा:

डी.एच.रूले (2021) ने अपने अध्यय में मूल्य शिक्षा की परिभाषा, इसकी उपयोगिता, उद्देश्य, लक्ष्य इसकी अवधारणा को वृहत् स्तंर पर ले जाना भारत में इसके विकास, इसे पूरे विश्व स्तर पर कैसे पढ़ाया जाता है के संबंध में व्याख्या की और इसमें शिक्षकों की भूमिका का भी विश्लेषल किया। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि मूल्य शिक्षा छाकों और समाज को प्रभावित करने वाले पाठ्चक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू है। शैक्षिक संस्थान और शिक्षक छात्रों के सर्वांगिंण विकास को कम महत्व देते है। मूल्यों के पर्याप्त समावेशन के लिए शैक्षणिक संस्थानों को भी उचित मार्गदर्शन और सहायता की आवश्यकता है। छात्रों को सहानुभूति, तर्कसंगत ज्ञान, आध्यात्मिकात, तकनीकी कौशल सीखे के माहौल में बड़े होने की आवश्यकता है। इस वैश्वीक दुनिया में उन्हें जीवन के प्रत्येक कदम पर इसे आत्मसात् करने की अतिआवश्यकता है।

ए. गोपालन स्वामी (2017) ने अपने अध्यय में पाया कि समाज में मूल्य आधरित शिक्षा की भूमिका पर चर्चा करना बहुत आवश्यक हो गया है। इसलिए उन्होंने शिक्षा को समृद्ध करने के निहितार्थों के बारे में विस्तार से चर्चा की है। मूल्य शिक्षा को आध्यात्मिक चेनना के अभाव में हम शिक्षक बच्चों को कुछ नहीं सीखा सकते है।

मूल्य शिक्षा आध्यत्मिक चेतना पर आधारित होती है। जीवन की प्रगति केवल आकांक्षाओं पर ही निर्भर नहीं करती बल्कि इसकी सफलता मूल्यों पर आधारित होती है। इसलिए देश के प्रत्येक शैक्षिक संस्थानों में मूल्य आधारित शिक्षा अवश्य प्रदान की जानी चाहिए। इससे उनके अंदर नैतिकता, ईमानदारी, परस्पर सहयोग का बोध होगा। ताकि वो जीवन के इस दौर में एक अच्छे नागतिक, नेता, व्यवसायी इत्यादि बन सकें।
डी.मेडासैफ ने (2018) में जर्मनी के कुछ 17 प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों पर मूल्य शिक्षा से संबंधित कुछ सभंक एकत्र किए सभी का विश्लेषण करने के बाद अंत में एक निस्कर्ष निकला की छोटे उम्र के बच्चे अपने विद्यालय से अधिक अपने परिवार से मूल्य और संस्कार सीखते है। अध्ययन

से स्पष्ट हो गया कि स्कूल के शिक्षक बच्चों को अच्छे मूल्य और संस्कार परिवार की तुलना में कम दे पा रहे है। इसलिए स्कूल स्तर पर अच्छे मूल्य शिक्षा प्रदान किया जाय जिससे शिक्षा की समस्याओं पर नियंत्रण किया जा सकें।

4. वर्त्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यों की उपयोगिता

मूल्य आधारित शिक्षा की उपयोगिता से ताप्पर्य ऐसी शिक्षा से है जिसमें विशेष रूप से मूल्यों पर बल दिया जाता है इसके अंतर्गत एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली का गठन किया जाता है जो शिक्षा के सभी अंगों जैसे- पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, उद्देश्य एवं शिक्षक आदि सभी मूल्यों का समर्थन करने में तत्पर हो। मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता जितनी आज के वर्त्तमान समय में है शायद इसके पहले उतनी नहीं थी। क्योंकि आज के समय में अनैतिकता, अमानवीयता, अन्याय की प्रवृत्ति अपने चरम पर है ऐसे में मूल्यों को शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। हमारे जीवन को शांत और सुखदायी बनाने के लिए मूल्य की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। आज हमारी युवा पीढ़ी में नम्रता, सच्चाई, ईमानदारी, बड़ों का सम्मान, शिष्टाचार, सेवा की भावना, सहिष्णुता, बलिदान आदि गुणों का बहुत अभाव देखने को मिल रहा है। मूल्य आधारित शिक्षा इन गुणों को बढ़ाने उसे आत्मसात् करने में सहायता प्रदान करेगी। आज लोगों के द्वारा जिस प्रकार का आचरण किया जा रहा है मानो कि नैतिकता, सामाजिक मूल्य पूरी तरह से विलुप्त हो गए है।

लोगो में ईर्ष्या, असहयोग की भावना फैली हुई है। मूल्य आधारित शिक्षा बालकों में सहयोग, सहानुभूति, परस्पर सद्भाव, ईमानदारी इत्यादि की भावना को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। आज के परिवर्तनशील समाज में मूल्य आधारित शिक्षा का यह मतलब नहीं है कि मूल्यों की एक लंबी सूची बना ली जाए उसे बिना समझे स्वीकार कर लिया जाए बल्कि मूल्यों एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए। वर्तमान में हमारी युवा पीढ़ी समस्त जनमानस वैज्ञानिक, फैशन परस्त भौतिक वादी विचारों के प्रभाव में आकर हमारे भारतीय आदर्शों मूल्य तथा मान्यताओं को भुलाकर पाश्चात्य जीवन शैली को आत्मसात् करने में लगा हुआ है। हमारे शाश्वत सनातन मूल्य कमजोर पडते जा रहे है। ऐसी स्थिति में इस बात की आवश्यकता का ऐसा स्वरूप तैयार किया जाए जिसके द्वारा समाज का प्रत्येक व्यक्ति मूल्यवादी मान्यताओं से प्रेरित होकर प्राचीन भारतीय शाश्वत मूल्यों का आधुनिकता के साथ समन्वय करते हुए आगे बढ़ सके। आज दिन-प्रतिदिन मूल्यों का हास होते दिखाई दे रहा है जो एक चिंता का विषय है।

5. मूल्य आधारित शिक्षा में शैक्षिक संस्थानों की भूमिका

शिक्षक शिक्षण और बालक में एक त्रिकोणीय सह-संबंध है। इसका उद्देश्य बालक को सामज, राष्ट्र, परिवार इत्यादि के लिए तैयार करना है। मूल्य आधारित शिक्षा में शैक्षिक संस्थानों की बहुत अहम और महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय में बालक सिद्धांत और व्यवहार दोनो ही विधियों से शिक्षा प्राप्त करता है। अध्यापकों और मित्र समूहों का प्रभाव उनके व्यवहार और मूल्यों पर पड़ता है। इससे उनकी अवधारणा प्रभावित होती है। मूल्य शिक्षा कोई अलग व्यवस्था नहीं है बल्कि पूरी शैक्षणिक गतिविधि का एक समृद्ध और अनुशासित अंग है जो मूल्यों को संवर्धित और पोषित करता है। स्कूल में बच्चे एक छोटे से समाज के सदस्य होते है जो उनके नैतिक विकास को बहुत वृहत् स्तर पर प्रभावित करते है। परिवार के बाद यदि बच्चे सबसे ज्यादा समय व्यतीत करते है तो वो स्कूल का प्रांगण है। स्कूल बच्चों को व्यक्तिगत आकार प्रदान करता है। शिक्षक स्कूल में छात्रों के लिए रोल मॉडल के रूप में काम करते है और उनके नैतिक व्यवहार को विकसित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाते है। शैक्षिक संस्थान अपने पाठ्यक्रम में ऐसे विषय और मुद्दे शामिल करते है जो ईमादारी, सम्मान, जिम्मेदारी तथा सहानुभूति जैसे मूल्यों को स्थापित करते है। खेलों और अन्य पाठ्येत्तर क्रिया से छात्रों में टीम भावना, निष्पक्षता, नेतृत्व, सहयोग, खेल भावना तथा परिश्रम की भावना विकसित होती है।

6. निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि मूल्य परक शिक्षा की अवधारणा शिक्षा को उन्नत और मानवीय गुणों से संवर्धित करने के लिए बहुत आवश्यक है। यह छात्रों को एक सक्षम नागरिक बनने में अपना महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसकी अवधारणा समाज में ईमानदारी, परस्पर सहयोग, भाईचारा, त्याग इत्यादि को सीखाता है। आज के भौतिकवादी युग में जहाँ एक ओर सभी अपने स्वार्थ साधने में लगे है वहि मूल्य शिक्षा हमें गाँधी युगीन स्वभाव को विकसित करने के लिए प्रेरित करती है। इसमें कार्यों के पीछे निहित सद्गुणों को बल दिया जाता है। मूल्य परक शिक्षा हमें सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृति सभी क्षेत्रों का सम्मिलित ज्ञान प्रदान करता है। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्य परक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों की छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है। जिससे बालक का सर्वांगिण विकास हो सके।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

मूल्य विमर्श पत्रिका, भालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र हिंदु विश्वविद्यालय काशी पी. न. – 16
एम.एन. श्रीनिवास का लेख, चेंजिंग वैल्यूज इन इंडिया टुडे
पांडेय आर, (2000) ''मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य'' आर.लाल. बुक डिपो मेरठ, वी. न. – 153
मूल्य शिक्षा, भारतीय शिक्षा मंडल, नागपुर
नायक, गोपाठ प्रसाद (2009) मूल्यों के विकास में शिक्षण संस्थाओं की भूमिका, परिप्रेक्ष्य – 16, अंक – 3, दिसंबर 2019
Dolgun ligaz & dolgun Tc omur 2018, Values Education.
Lakshmi V. Vijaya & Paul M. (2018), Value Education in Educational Institutions and Role of Teachers in Promoting the Concept.